ॐ

श्रीरूपभवानी रहस्योपदेश

सारिथ् गटु त्राविथ् ग्वाशस् च़ायस्
मारिथ् सारि् इम् च्यानि पा़ इन्द्रय्।
तवय् सहज़कलि यूग् सादिथ्
सर्ववादि ज़ानिम् ज्ञान-पानस् ह्यहु

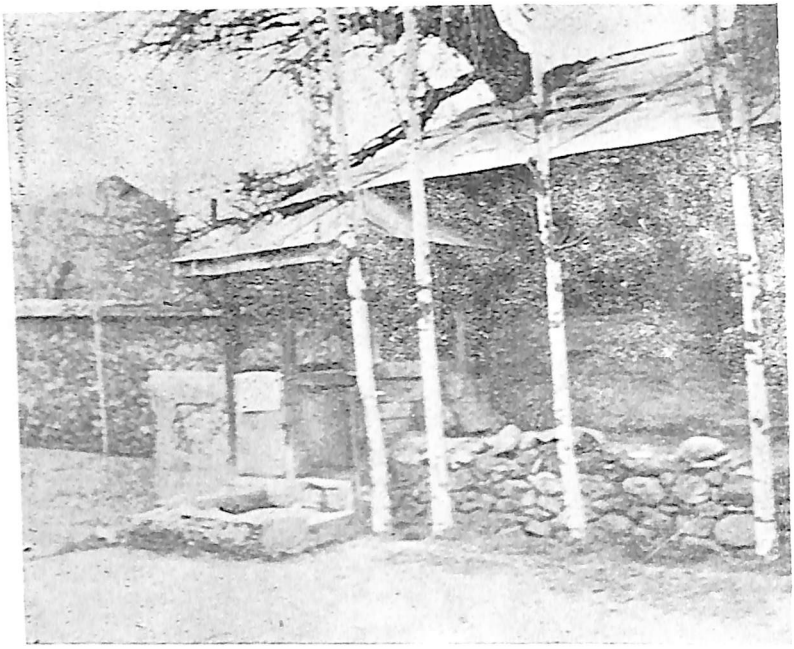

नवाकदल (श्रीनगर) में रूपभवानी का जन्म-स्थल।

वितस्ता तट पर स्थित, श्रीनगर में देवी रूपभवानी का वार्षिक श्राद्ध रचाये जाने का स्थल। यहीं पर यज्ञशाला है और अलख-साहिबा ट्रस्ट का कार्यालय भी है।

ND

ॐ

श्रीरूपभवानी - रहस्योपदेशः

संपादक :

डा० शिवानाथ शर्मा शास्त्री

सर्वाधिकार प्रकाशक के
पास सुरक्षित हैं !

जनवरी 1996
मूल्य 20 रुपये

.....

प्रकाशक :

1- श्री अलख साहिबा ट्रस्ट, (रजिस्टर्ड)
तिर्थ नगर बोड़ी तालाब तिलू जम्मू

2- श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)
नवाकदल श्रीनगर 2007

मुद्रक : लियो प्रिन्ट्रस, दिल्ली -92, Tel. : 2209913-14-15, 2417856,
Fax: 2417857

[८५]

वोतशन (मणिगाम) का चमत्कार

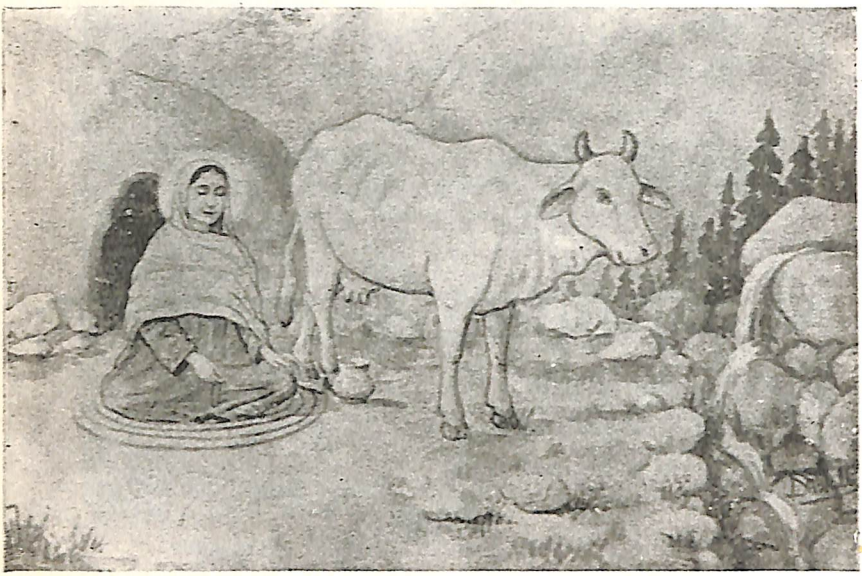

देवी रूपभवानी के पात्र में गौ का स्वयं दुग्धदान।

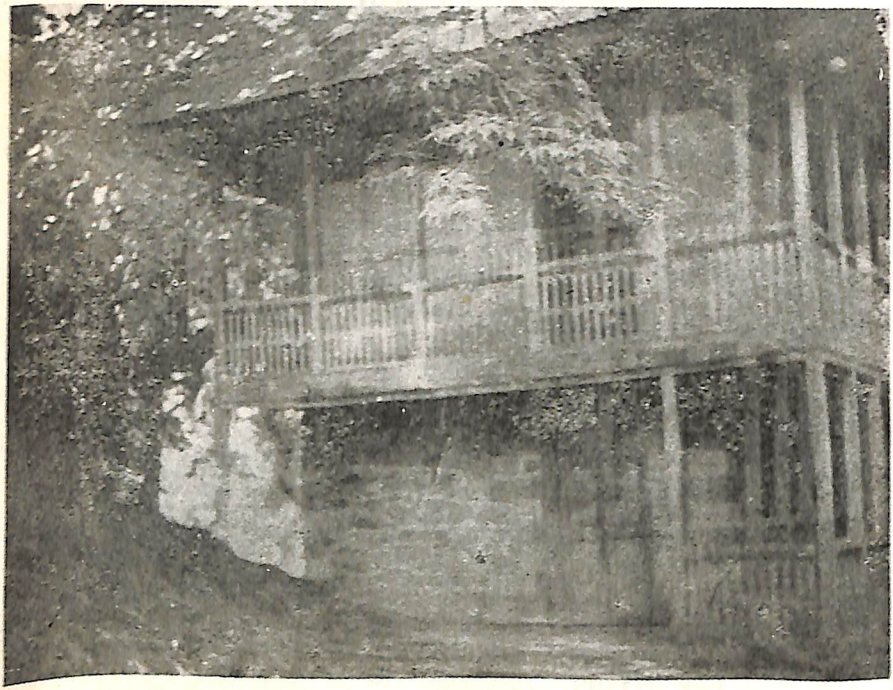

मणिगाम स्थित देवी रूपभवानी का साधना-कक्ष ।

पराभट्टारिका

ॐ

श्री पराभट्टारिका महाशक्ति 'तदा तदावतीर्याहं' इत्यादि अपनी शुभ - प्रतिज्ञा के अनुसार जगत - कल्याण के कारण समय २ पर शरणीभूतों के कुलधर्म - जातिधर्म तथा देशधर्म की व्यवस्था को पुनः संस्कार करके तथा और समुद्धार के लिए अवतीर्ण होती है । अनन्तर भौतिक रूप में अपने शारीरिक कार्यक्रम से देश को शिक्षा देती हुई भक्तजनों को अपने रहस्य शस्त्र से उद्धार करती है, यह मर्यादा सनातन काल से श्रद्धेय एंव प्रचलित है।

इसी नीति रीति को प्रत्यक्षावस्था में दिखाने के लिए श्रीजगदम्बा अपने अंशरूप में सन् १६७७ तदनुसार सप्तर्षि संवत् ४६९६ में अपने सद्भक्त श्री पं. माधव ज्यू दर के घर में माधवी - पूर्णा के असामान्य काल में श्रीरूपभवानी नाम से आविर्भूत हुई । अपनी अलौकिक बाललीला और अमान्य धुरन्धर चकित से रहकर शरण आये । आपने अपने पितृकुल एंव श्रद्धालु शिष्यों तथा भक्तजनों को अपनी मातृभाषा में 'रहस्योपदेश' से उद्धार किया। और आगामी काल के लिए इस पथप्रदर्शक उपदेश को छोड कर (आप संवत् ४७९६ तदनुसार विक्रमी सन् १७७७) माघ कृष्ण सप्तमी को अपने कथनानुसार अवस्था के सौ (१००) वर्ष में परमधाम में लीन हुई ।

इस काल में आपने जो २ कार्य देशशिक्षा के व्यवहार में लाये और सिखाये हैं, वह निकट भविष्य में भक्तों को आपके पवित्र 'जीवन चरित्र' द्वारा हिन्दीभाषा में सविस्तार पुरस्कृत करने की भी आशा श्रीअलख् ईश्वरी की कृपा से पूर्ण होगी।

रहस्योपदेश :--

सह रहस्य-उपदेश आपके निर्वाण काल से लेकर कुछ समय तक गुरुक्रम में व्याख्यान रूप से ही चलता रहा, पुस्तक की आकृति में न था। फिर शक्ति की दुर्बलता के कारण इन उपदेशों ने ग्रन्थ का स्थान लिया, कहीं २ इसकी प्रति शारदा अक्षरों में उपलब्ध थी, विशेष करके फार्सी अक्षरों में इस ग्रन्थ का बहुत प्रचार था, इसी कारण इसमें कहीं २ पाठ भेद भी होता चला आया। कुछ समय पहले इन वाक्यों का मुद्रण भी हुआ था, परं मुद्रक को जैसा आदेश मिला, वैसा छपवा दिया।

दो वर्षो से मैं इस शुभकार्य के अन्वेषण में था, श्री जगदम्बा की इच्छा और आज्ञा से मुझे एक प्राचीनतम आदेश प्राप्त हुआ, फिर और भी तीन प्रतियां एकत्रित करके इनके संमेलन से पं. हरभट्टशस्त्री जी के संशोधित आदर्श की भी सहायता से इस संस्करण को पूरा किया । आशा है, अब मूलग्रन्थ से इस संस्करण में कोई न्यूनता नहीं रही है । और यह देश का कल्याणकारी होगा।

विषय : -

इस सदुपदेश में श्रीअलख् ईश्वरी जी ने अद्वैत शैवमत के अनुसार कर्म उपासना और ज्ञान के सदुपदेश किये है। राजयोग का क्रम एंव समाधि ा का वर्णन भी किया है। बाह्ययोग तथा अन्त:योग, पूर्णाहन्ता और उसका योग भी दर्शाया है। तात्पर्य है, कि योग्य अधिकारी साधक के लिए कोई भी सिद्धान्त इसमें छिपा हुआ नही हैं।

श्री अलख् ईश्वरी ट्रस्ट के कार्यकर्ता आजतक ऐसे शुभ कार्यो में अपनी पवित्र भावना तथा निष्काम वासना से तत्पर हैं। जिन्होंने आजतक

श्रीअलखईश्वरी जी के मन्दिर आदि शुभकार्यों के बताने में अपने कायाकष्ट से धन्यावाद के योग्य निष्काम कार्य किये हैं ।

इसी ट्रस्ट की पूर्ण सहानुभूति से मेरे इस संपादन कार्य में विशेष उत्साह हुआ, अत: मैं इस ट्रस्ट को हार्दिक धन्यवाद देता हुआ इसकी सद्भावना को सराहता हूँ ।

यह ट्रस्ट दिये हुए संशोधित पुस्तक के विषय में श्री पं० हरभट्टशस्त्री जी की हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है, जिन्होंने ट्रस्ट को ५ वर्ष पहले पाठ पुस्तक शुद्ध करके दिया था।

मेरी पूर्ण आशा है - यह मुद्रित संस्करण श्री अलख ईश्वरी जी की पवित्र - वाणी है, अत: श्रद्धालु भक्तजन इसका पाठ करने से जगत् में यश तथा ज्ञान पाकर पारलौकिक श्रेय: प्राप्ति के पात्र बनेंगे। और इस पवित्र - पुस्तक को अपने-२ घरों में पूजा स्थान देकर अपने घर तथा परिवार को व्याधियों से रक्षा करेंगे। क्योंकि इसमें श्री अलख ईश्वरी जी का यही वरदान है।।

ओं शम्।

संपादक :

शिवनाथ शर्मा शास्त्री

१५-९-२००७
नरवीरस्थान
श्रीनगर-काश्मीर

श्रीरूपभवानी रहस्योपदेश:

अलक्ष्येश्वरी श्री रूपभवानी अपने पिता तथा गुरु श्री माधवजू दर से दीक्षा ले रहीं हैं।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।१।।
अभिप्रेतार्थसिध्यर्थं पूजितो य: सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नम:।।२।।
नमामि सदगुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये।।३।।
श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे ह्यानन्दाविग्रहम्।
यस्य सांनिध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम्।।४।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नम:।।५।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरु: साक्षात्महेश्वर:।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नम:।।६।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नम:।।७।।

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोभ्दूतं यथा निद्रया।
यः साक्षात् कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ।।

श्रीगुरवे नमो नमः

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ् विचार्यम्
बहुबल संबाहु एकतं स्वयंबू परमाकारी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम्गती ।।१।।
शुद्द युक्त-मूलादारी क्वण्डली मण्डली गौरी।
स्यद्द अर्थ् सूक्ष्मू सुष्वप्ती चक्र विरक्त शान्तादारी।
ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती।।२।।

---

१ 'सुहत्' क. 'सुहृत्' ख. 'संगत्' च. पाठः। २ 'बहुबलू' घ. 'बहुबलूत' ख. 'बहुबाहूक्' क. पाठः। ३ 'एकोतं' ख. पाठः। ४ 'निर्वाणरहस्' क.ग.च. पाठः। ५ 'परमा गती' क. 'परमा गतिः' ख. पाठः। ६ 'शद्धोक्त' ख. 'शद्युक्त' च. पाठः। ७ 'कुण्डलिनी मण्डले' क. ख. ग. घ. पाठः। ८ 'सूक्ष्मौ सुषप्ते' ख. पाठः।

तद् रूपमयी तत्परमगती स्थानी प्रवाही ।
गति गट् पूरनी च्छदा देह तृपितं
समर्थ् स्वामी परमार्थ् निदानम् ।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् ततो परम्गती ।।३।।
उपनिषद् पारिजाता अख्यय् फल् एक्
अर्थी सद्गवर् योगी अदेहो पुरानम् ।
बहु तीज्वानी सुशीतल् सुदर्शन्
निनायु अग्रायु परम् दीफ् प्रसन्नो ।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् ततो परम्गती ।।४।।
पवित्र नेत्र पश्यत मुखी अन्तर्
बाहो बहु-दनाडी असंख्य कामू कर्त् ।
यिहुय् राज्-यूगी दाता पिता सुय

---

१ -'त्वत्' च 'तत्परमगति' क ख. ग. ड., पाठः । २ 'प्रवाहे घ. पाठः । ३ 'तृप्तिं' ख. पाठः । ४ 'सुमर्थ' घ. 'मन' च. पाठः । ५ 'अक्षय फल एकार्थी' क. एकोऽर्थी' क. ख. घ. पाठः । ६ 'आदितो' च. पाठः । ७ 'निर्वायो' च. पाठः । ८ 'असद्य कामकर्त्तये' ग. पाठः ।

सर्व कांख्या सु अर्थ पूरनी

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती।।५।।

निर्लज्जा रमनू परिरूफ् निदारा

सृष्ट थ्यथ् संहारी प्रलय च्यथ्।

अदृष्टो अगंन्थे निज़ानो प्रसन्नो

आदिदीव तथ् निहानो निष्कल थ्यररूफ।।

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती।।६।।

लुत्र वित्र न आसा न गुत्री न बाशी

न कुली न कृत्यं महानन्दरूपम्।

शयुम्-थान् वासी आदि सर्वमध्यं

जिता संन्यासी ब्यन्-बिन्दु-नादी।।

अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती।।७।।

न जाया न जन्मी दग्दकर्मकाण्डी

---

१ 'अर्थपूरनी' क. ख. ग. पाठः। २ 'पररूप' ग. पाठः। ३ 'प्रसन्दो' क. ख. ग. पाठः। ४ 'रूपस्' क. ख. घ. च. पाठः। 'रूपम्' ग। ५ 'न' च पुस्तके नास्ति। ६ 'रूफ' घ.। 'रूपस्' क. ख. पाठः।

यथा शान्त्बस्मी अरूपा स्वरूपम्।
सूह सर्व्वत्र-सुखी अदेहो समादि
अमोहसावदानं तथ् निष्कल् निराकार।।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् ततो परम गती।।८।।
अहंत्व-ममता गलिथ् थ्यथ् प्रलय ना आसे
यिथु न आसि-मीलिथ् कवलदल् जलबिन्दु।
मध्य् आकाशी कदाचित् ब्रछ् ना आसे
लगि न-त क्या वाचि फला रस ग्वनी।
शिला ज़ल संग् अग्न दाह बस्मो
साद् ताय् पसमु सर्व-अन्तर सृष्टी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् ततो परम गती।।९।।
वेदवाख्-अर्था अमृतनदी संप्रीता
अनेक प्रवाही समनय् षोडशचन्द्र कल्।

---

१ 'दग्ध कर्म कर्मकाण्डी' क. ख. पाठः। २ 'अद्दन्ता' ग पाठः ३ 'युथा न' च 'यथा' ग. पाठः। ४ 'दलत' क. ख. ग. घ. ड. 'विन्द' ग. पाठः। ५ 'वृक्ष' क. ख. ग. पाठः। ६ 'वा' च पाठः। ७ 'जलगस्' ग पाठः। ८ 'तापसो' क. पाठः।

स पण्डिता समदर्शगनी अर्चनीदीव्
सु-निर्मल तोत्री सथ् तव् पाठि्।
सर्वत्र जगद्-गुरु सेवा अनन्तपूजनी एक
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् ततो परम गती।।१०।।

निर्वाणदशश्लोकी- स्तवः।

..... oo .....

ओम् ग्वर अन्तर् तथ् निर्मलम्
शद्धं अत्यन्त् विद्याधरम्।
लल्-नाम लल् परमा ग्वरम्
शिव-माधव नाहं परं ब्रह्म सोहम्।।१।।

---

१ 'संपीता' ग. घ पाठः। २ 'समन्वय्' क. ख. ग पाठः। ३ 'तव-पाठी' घ. 'स्तव पाठी' ग. 'तौ पाठी' च, पाठः। ४ 'वरमं ग्वरम्' ख. पाठः। ५ 'सर्वराग' ग 'रोगान्' ख. पाठः।

कृपा करे सर्व रूगा हरे
ज्ञानी छ़ाल फिरे तान्-तान् व्यसरे।
समादि-देह समरे सयि अग्नवतूरू
अखंड यज्ञ करे अग्न प्रज्वाले।
गीता पडे ब्वय् चे़ने कपाल मूचे़
गूपाल जी नाटय करे गूपी-सहाय्।।२।।
युस हुमसूय् मदुरस् ग्ययि कनि दिये
कन्द् हुहे खंड हुमि पननु दीह।
श्रीफल् ज़ाफल् सुफल़ ह्यये
मूरिथ शेर नैवेद्यस् ज़य्।।३।।
समिव त्यकारन् कि-न् अकुय् ब्वय्
पान-ति ब्वयि केंह् यिहुय् अकुय्।
यज्ञस् ब्हह्यो-त बस्म कियवे
अंग न ब्वयि-केंह् आंगन् द्राव्।।४।।

---

१ 'फिर्यस्' ख, पाठः। २ 'नाट्' क.ख. घ 'नाण्ट्' च. पाठः। ३ युस् द्योम सूय्' क. ख. पाठः। ४ 'हुमि' क. ख. ग. पाठः। ५ 'साफल् ह्ययि, क. ख. पाठः। ६ 'के' क. ख. ग. पाठः।

पाताल छ़ाल फीरिथ् ता खारूम
म्यचि़-त कन्चऩ मन्ज़ि़ अनुम् पय्।
अद नद् वुदुम्-त गल-मद प्यवुम्
प्रबातुं साथ् स्वंथु प्रज़ालु-ता ना किंह्।।५।।
हिज़ि़ अनि पाताल गगन गमे
मूरत् ना मूरत् पॉच तत्व्।
चीतन् मले शून्य तिह गले
शन वूनिय् सा छ्यस सत्।।६।।
आसे ब्वये न-आसे पान्
नासे ग्रास् करे पवन्।
रस् कासे ना किंह् फासे
ना सीर् काँह् आँ सीर ब्वय्।।७।।
द्रायस्-त् न्येरवनु आवह्यम् ज़ंगे

---

१ 'ता' क. ख ग घादौ नास्ति । २ 'अनुमस्' ग. पाठः । ३ 'मथुम्' ग. स्वथु प्रज्वलुता' क. ख. ग घ पाठः । ४ 'सूरत् सूरत् ना पंच' क. ख. ग. पाठः । ५ 'सामत्' घ. पाठः । ६ 'ब्वय्' क, ख. पाठः । ७ 'ना आसि' च. पाठः । ८ 'नरकस् कासे' क. ख. पाठः । ९ 'ब्वह्' क. ख. घ पाठः ।

चयु न-त कारुन् मंगे कस्।
रंगा रंगी गुल् फवलिहग्म अंगे
म्य न-त ब्यय च्यत्थ् च़यंगे कस्।।८।।
पदवी विना मा त्राव् पादू
वादा पूरंख आद् छु वासा।
ब्रकनु नाबद् ग्रकन् खासिय्
परमु पदय् परमानन्द् हांसिल् छुह्।।९।।
रूपाय् ता यिह् आयिय् वरा
नरा निरालम्बा रूफ्।
कृपा पर आनन्द जान वरा
अवतार रूम-रूम रूफ्।।१०।
स मुद्र प्याल-त मदुर वासन्

---

१ 'आयिम्' ग. पाठः। २ 'फवलुहम्' ग. 'फुलाह' च पाठः। ३ 'पाद्' ग. पाठः। ४ 'वास्' क. पाठः। ५ 'ग्रकनी' खासी, घ. ब्रकान् नाबाद् ग्रकनी खासी परम पद्' ग पाठः। ६ 'जान वारा' क ख. ग. पाठः।

अवय् क्या सन मंग तय्ं।
ज्ञान रूप-त शून्या आसन्
आसुन न-आसुन् सूतिय् छुह्।।११।।
यवय द्यान बक्चिश करे
तवय ज्ञान आदरे पान्।
यवय प्याल बस्मूय करे
तवय लय सुमारे स्मरे पान्।।१२।।
युस तौख् त्रावि-त मोख मिलावे
प्रयना प्रयम् लागे प्रार्।
वथरि ज्ञान-त पान् तलाडे
शून्यस शून्या सूत्य मिलावे।।१३।।
स्वर रत्रावि-त त्रहा ना मंगे
तीर् लायि-त्-त्रावे संग।

---

१ 'व्वज्' क. ख. ग. पाठः। २ 'यवा' 'तवा' इति च. 'यव' 'तव' क ख घ. पाठः। ३ 'भरिम् मै करे' घ. च. पाठः। ४ 'त्राविथ्' क. ख. ग. घ. ड. पाठः। ५ 'प्रैना प्रम लारे प्रार। मथूर्' क. ग. घ. 'प्राणिन्' ख. पाठः। ६ 'तलरे' क. पाठः। ७ 'स्वर त्रावित' क. ख. ग. पाठः। ८ 'तृह' ग. पाठः।

शेरे गंग-त न्यथूय नावे
द्वह् पाथि-त अर्जुम् ब्रोंह् ।।१४।।
शून्याह् अंशा आयाम् अथे
गंज् सुमारुम् तवय् सूत्य ।
यव-सूत्य-जन् व्वपदावुम्
तिय् ठहरावुम् मनस-सूत्य ।।१५।।
ग्वारिथ् समरिथ् शून्या खाडुम्
पारुद् मारूम् तवय्-सूत्यय् ।
पंच़-अग्ना लाल चड़ावुम
ग्वाश प्रजा़लुम तवय-सूत्य ।।१६।।
न क़रूम् रुत् न यछ जा़नुम्
ज़ि रुतुय न-त रुतू किंह क़रुम नाव ।
मूद् मुतुय दीह् संदारुम्

---

१ 'पाथ्योम्' ख. ड. पाठः । २ 'ब्रम्' क. ख. पाठः । ३ 'ज्ञान' क. ख. घ ड. पाठः । ४ स्वम्बरुम' क. खादि पाठः । ५ 'स्वम्बरिथ्' क. खादि पाठः । ६ 'तमिय सूतिय' ग पाठः ।

न-त्र ज़ीवन्तु मारु माव्।।१७।।
आगर्-फीरिथ् ताय् ग्रजो़म
वुगवाज़ डूरुय सगाक माव्।
ओरय कृपा तिह् आलम् बरुम्
योड् किंह् न स्वरुमाव्।।१८।।
प्रबा ती-ज़य व्वन्दि आदरुम्
रूम-रूम ज्योथ् तरूमाव।
कृष्णा-रूपी ब्रह्मा स्वरिथ्
स्मरिथ् विष्णु महेश्वरा।।१९।।
ग्वर-म्वखि द्याना द्यायिरे
चरण हृदय कमल।
तुल पवन् मूल शून्या
ऊध्वमुखी गगन्र मण्डल्।।२०।।

---

१ 'फेरथ् तय् ग्रजुम्' क. खादि पाठः। २ 'औरकि कृपा सूतिय्' ग. पाठः। ३ 'योर न किंह्' क. ध. ड. पाठः। ४ प्रबाते ज्वय्' ख. घ. पाठः। ५ 'तरूं' क. पाठः। ६ तुल् मूल पवन्' ग. 'मूल शून्याह्' ख. पाठः।

नाना-रंग् शाख़ चतुर्वीद्
पानुय् मान् तह् नद् सग़वान्।
नाना-प्रकार द्यानुक् थाना
ज्ञाना नामा अनीक दन् थाना।
पूरक् मनय् स्मरे निराकार्।।२१।।
सारिथ् गटु त्राविथ् ग्वाशस् च़ायस्
मारिथ् सारि् इम् च्यानि पा़ इन्द्रय्।
तवय् सहज़कलि यूग् सादिथ्
सर्ववादि ज़ानिम् ज्ञान-पानस् ह्यहु।।२२।।
दरनी प्रावूम्-त स्वरने प्ययस्
हरा व्वञ् चूय ब्र वुसरुम्।
दिम् कोसुम् ज़रि ता आसुम् च्यि
आस् करूथम्-तय् खास् बरम्।।२३।।

---

१ 'पान मान' च. 'मान' ग. घ. पाठः। २ 'स्मरे वानीं' क. खादि पाठः। ३ 'ह्यहुय्' ग. पाठः। ४ 'हरा तिय् चय् बर् वमुम्' च. पाठः। ५ 'जरेत आसुय च्यय्' ग. पाठः। ६ 'बरूम्' क. पाठः।

सहज़ सिपर पूरिथ द्रायस्
दितिनम जह्-पर शाही-त शाह्।
हिश् छ्यस् सहजस् लांगिथ् बाहज़न्
ह्यति वाह-ज़न् तोतन्-त हार्य गिन्दिम।।२४।।
पूरिथ् सहज़ सिपर-तय्
तुरगस् ज़ीना लगू रव्।
पोशनूलन् तय वीना वज़े
करानी शंख-शब्द तय्।
गंटा वायान् क्रियनद् बुज़े
दिवान् छ्यस् शंकरस् गडु।।२५।।
हाल् मलि तय ज़ाल् वहारे
प्रान् लाडे मरे मीन्।
रूग् गालि-तय यूग् संदारे

---

१ 'पैरिथ्' च. पारिथ्' क. ग. पाठः। २ 'सह्ज़न् लागिथ् ब्ह्ज़न्' क. पाठः। ३ 'ह्यतु' ग. पाठः। ४ 'गिन्दुम् ग 'गिन्दुमस्' घ. पाठः। ५ 'बाहन् घ. पाठः। ६ 'लोर' क. ख. पाठः।

बूग आहारि करे शरीर ।।२६।।
सूर् गौव् सु फवलि अंग् मेलने
अंग् सवारे बंग निवारे
यिह् न फले तिय वले
जन्त्र् तन्त्र् अनाहत् अनामय् अक्षय् ।।२७।।
सावदान् खेले अंग् नचावान् रहे
अंग प्रज़लान् थ्यर वासन् दारान् ।
अटल सावदान् वह् आप् भगवान्
ब्वह् शिव-गथ् तय चूह शिव पान् ।।२८।।
वर् दियि-त ब्वह नेरय-वासा
भूमि पाद् गमे रसा रसा ।
खसान्-तु शब्द शुनुम आहंग्
सारंग् राग वीना-त च्यंग् ।।२९।।
युसुय् सहाय सुय पान् आसान्

---

१ 'र्वय वासा' घ. पाठः । २ 'पाद गंबॉ रसा' घ. पाठः ।

अथवासा शिव-तां शून्या कस्।
युसु व्यह् गाले त्यह् न्यवारे
सुहं शरीर थावे पानस् ब्रोंह्।।३०।।
पर् वहारे सार्था तारे
दुयी ब्वह् गाले आसे तस्
ज्ञानी दर्शन् दियि यख़लासे
तस् पान पानय् कल्पन् कासे।।३१।।
नाव् तारा वाव् सवारा
ना-रंग ना वर्न तु न गूथर्।
ब्रोंह अन् न्यन्दय् पतु करि वारय्
क-हन्दूय् दार-त कस् चारे।।३२।।
दियि अस्य-ति तारा त्रीयु औतारि
युसु गारान् सुह सूतिय् छुह।

---

१ 'पानय्' क ख. पाठः। २ 'अथ् वासनि' 'वासञ्' क. ख. ग. पाठः। ३ 'परवारि' क. ख. ग. पाठः। ४ 'साथ' ग पाठः। ५ 'वारथि् घ पाठः। ६ 'कहन्दु दारि - त कस् दारे' क. ख. पाठः।

ब्रोंह् ब्रोंह् पकि-त द्रह् मांव् लोसे
न्यथ्य् पोशि-त सुय् छुय् साथ्।।३३।।
यिथिस् वावस् थरू मा खोरे
मुच़ रोज़ि तह् क्याह् छुस् ज़ाफ्।
च्यथ् बाज़िरिथ ज़ाथ माव् सोरे
छिविथ-त थुरिज़े कति क्या रूफ।।३४।।
युस् मनि ह्ये द्यान-त पानस् तोले
कुँह् न गेलि-त कैंसि न गेले।
ज़ागि हरस्-त लाग्यस बेले
पानय् पानस् सूत्य मेले।।३५।।
संतोश समाद् एक आसन् पर
मैं यूँ लगाया प्रयम का पथ्।
दृढ़ किया वालवाशी ऑखियों का

---

१ 'सूत्य् छुय्' क. ख. पाठः। २ 'ख्यथ् बाजिरिथ्' क. ख.। 'क्षित्' म पाठः। ३ 'हिय्' पाठः। ४ 'एकासन्' घ. पाठः।

ज्योती स्वरूपा क्या करूं मेरे से तेरे का।
सूक्ष्म् रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से
तुम्हारे चरण हृदय में बसाया।।३६।।
अपने घर आया आप साँई
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं।
यह बोध आया गुरू की बड़ाई
जिन गुरु ने दिया सत का तत्त्व बतांई ।।३७।।
यव तूड् चलिय् तिमय्/वल अंबर
यव ब्वछि चलिय् आसख् तृफ्थ्।
तिमय् आहार बुख्त् युक्त यूग कर्
रूग् गलिय् त आसख़ म्वख्त्।
तेलिय् निष्कल् तुष्टीय् विशेषा
खेल् मीलिथ् - तय आनन्द च्यनु।।३८।।

---

१ 'यवा' ग. घ. पाठः। २ 'यवा' ग. घ. पाठः। ३ 'त्यलि' ग. पाठः।

बाग चायस्ि बागे आयस्
परमा-सरस् नारस् त्र नरस्।
शरने आयस् लल्लीश्वरस
श्री सत् ग्वरस् माधवा शिवस्।।
सीवादीवस् साकारस् निराकारस्
अन्तरकिस् सत्र. सूय व्रतस्।।३९।।
अहम् पदव् सदा माधव्
शिव रव् हंसा अनुम्।
म्य-दावे प्याल बरिम भा मदु किय
म्य-दवि् हाल प्यवीम् सु-दवि्।।४०।।
दीह आनन्द नद्र मया
लूचन प्याला मुच़र।
साकय्र पिलाओ हुह्-हा
ब्वह् ब्वहा हाहा मंतुवाला।।४१।।

---

१ 'अनिम्' ड. पाठः। २ 'बर्येम' ड. पाठः। ३ 'देहानन्द' क खादि पाठः।

आगर् ग्रज़ि तय्र् नद् सा॑ज़ी
बान् बरिथ् ता॑य् फिरिथ् खा॑सि ।
ख्यन् कमा-तय् व्पा नर
ब॑रि ब॑रि ता॑य् पीव् यख्लास् । ।४२ । ।
आग्र ग्रज़वूज़् अमृतूच्यं नदा ।
रज़्वूज़् प्रज़लान् सुदा-बूथ् ।
तीलिथ्-त लदवूज त्रिन बवनन कदा
मीलिथ-त समुद्रंच पदवी ब्वय । ।४३ । ।
होश् मेले-ता पोश् फ्वलानी
गोश् खिलानी सादू-संग ।
गंज् ज्ञानी अव-रूप द्यानी
कृपा च्याज़ी बहु-वा॑नी रंग । ।४४ । ।
सुह् माह शमाह प्रज़लानी
तमाह्-ब्यन् ज़ला॑नी ब्वह् ।

---

१ 'खासा' स्वर् अख् माता उपानर्' क. खादि पाठः । २ 'मेलि - त पोश फ्वल्लानी' ग. घ. पाठः । ३ 'खेलानी' क. ख. ग. पाठः ।

अव-रूप प्रयम छुय् मेलानी
यिमय् पद कैंसि मेलानी क्याह्।।४५।।
मथुरा पथ ब्रोंह् सत-रूप्
मेलुयौ सथ-गथ् त तत्त्व्।
तेलुयौ रोय-रगे हर्-रंग
मेलुयौ आत्म-संग-रव्।।४६।।
अवल करेयिम कहन् अट
लट् दिववनु हावुनम् द्यान्।
शमर्याम् देह् द्यव् अवय् वट
छ़ट् फेरवनु अवय् म्यानु पान्।।
तुष्टुभ् त कासूनम् तीत्रन् गट
ज़न् चा़टस ग्वरी वख़नुम् ज्ञान्।।४७।।
युसुह ग्वर पिता सुय् छुह मोल्

---

१ प्रेम छु ख ग पाठः। २ 'क' च. 'कै मलाने क्याह्य' क्याहय्' ख, ग पाठः। ३ 'मतरूप' क. ख. ग पाठः। ४ 'राग रगि' क ख. ग. पाठः। ५ 'करेयिन्' ग. पाठः। ६ 'हावुन्यम्' ग. पाठ। ७ 'कासुम्यम्' घ. पाठः। ८ 'वख़नस्' वख़नम्' घ पाठः। ९ 'छुम्' न. पाठः।

सुह इह प्रबल दीप प्रकाश।
सुह् इह् सर्व-कलस् उदार् करवुन्
सुह इह ईश्वर् सुह छुह ग्वर्।।४८।।
क्वह यिद दज़न् व्यह् ह्ययि बारे
ब्वय् ह्ययि हाहू अच्यस ग़्रख्।
कूह त्रावे वुध्यस् स्वबावे
शहले चन्दन-दारे क्राय्।।४९।।
युस् ब्वह तां ब्ययि व्यचारे
इन्दय् मारे ज़न्-म्वंगर्।
स्यद्द तां सादू लगि अथि हुनरे
कैंसिए लंगु-त बारे क्याह।।।५०।।
द्राव् वुफे वाव-रूपी गुर्
ग्वर ईश्वर् आव् अविनाशी।

---

१ 'सुय् छय' २ कद् यद्' ग. 'युद्' ख. पाठः। ३ 'व्वहा-त' ग पाठः। ४ 'इन्द्रय्' ग. पाठः। ५ 'कैंसि लबु - बारे क्याहय' क. ख. ग. 'क्याय्' च. पाठः। ६ 'रूपी' ग घ. च. पाठः।

पान् मशे तां द्याना तोशे
स्वमन् परमानन्द् वांतु तथ्-राशी।।५१।।
सुह वा अन्दर न्यबर प्रथ् दीशन्
कंद्यव् दीशन् ग्वारान् लूस्तुय द्वह्
च्यथ् थव् मडिस अंदर छुय् निशान्
दुशन् वांलिथ-त दितस छह।।५२।।
कैत्यन् कृपा करूथ् पान् स्रगान्
यिमन् मन् लगान् पानस सूत्य।
इह व्यूह त्रिथ सु देह-साधन्
वातिथ् वानस लाल रत्न् कथ् बानस् कुसु।।५३।।
नव् पाठ् ज़ानस तव पाठ् पड
नव् ज़प् जान् सुह् माल् फिर्।
स मुद्रा हाव-तं चव मदुरु प्याला च्यम्
नद् नाल् रट् ब्वयिनय ज़य-रत्न्-माल।।५४।।

---

१ 'लूस् तुम् द्वह' ड़. पाठः। २ 'त' नास्ति क. खाहिषु 'दितस्' ग. पाठः। ३ 'करुथ्पान् स्रगन्' ख. घ. पाठः। ४ 'आव् सुदह सादान्' ग. घ. 'सादान्' क. ख. पाठः। ५ पाठ् पर' क. ख. पाठः।

नव पाठ ज़ानस तव पाठ पड
सुह-पाठ् पानय् मने वातु।
जपान् आत्म त द्पान् वॉनी
पीव् मदु-रस् बांज़ि बरिथ्-तां छिव्।।५५।।
तिथु घाना ह्यत यिथु जानस अन्त
तिथु सहज़दि-त थिथु पानस म्य चूह-तु
तिथु ब्यय् चह् लाग्-त यिथु बहुत शंकर-बखूच्
यिथु पानस् मॅचूरावनस् न कुँह्।।५६।।
इव्हय् कुल् मूल त श्वाह् तुल्
यवा शाख पन-तां फूल्।
दात पप्यव् स मुद्रा पान
रसे सवाद त नन्यस् बोय्।।५७।।

---

१ 'पर' क ख. पाठः। २ 'पान मने वाचू' क. ग. 'पान मिनि वाचू' घ. पाठः। ३ 'बरि ताय्' क. घ. ड. पाठः। ४ 'न हिवु' क 'न ह्युद' ग पाठः। ५ 'शाह' क. खादि पाठः। ६ 'यव' क. ख. पाठः। ७ 'स्वाद' ग. पाठः। ८ 'नन्यसृ ज़ाथ् ग पाठः।

मन्द स-मुदुर् दोनु सांनी
छव्क समाद् नाद-विन्द् च्रट् ।
दान अखंड मिलायो मख़न
सादिकारिस द्रायाम् ग्यव् ।।५८।।
तव रूप यज्ञा हूमस करिथ्
आहुत दिचॅस् अंगन् हूँज़ ।
ज्योत् पज़ाने कार्न च्याने
माने अतुर-त नन्यस् ब्वय् ।।५९।।
बान फुटरि-त पानय् थुरे
कुसु मरि-तां कस् लगि द्वख् ।
पानय् नहावे पानय् पूरे
कुसु सोरि-त कस् यियि टूख् ।।६०।।
प्रथ जिन्सस् अंशा थंवुन्
अथ्य कैंसि-न चीतन् थंवुन् ।

---

१ 'गेव्' ख ग. पाठः । २ 'जो तत्पर् जाने' क ख. पाठः । ३ 'कुस्' क. ख. ग. पाठः ।
४ 'कुसु मारि' क. खादि प ठः । ५ 'थाबुन्' क. ख. ग. पाठः ।

तति ज़न् अनुन्-त पूँछ़ा फीरिथ ता

न्यायुन् ब्यय् मिलावुन् ग्जन् सूत्य्।।६१।।

यिवान् पान-त ज़्यवान् पान

रिवान् पान-त निवान् टूख्।

नाना प्रकार गिन्दान् पान

रिन्दान् पान-त ह्यवान् पत्थ्।।६२।।

प्ययान् स्वादस् त यिवान् नादस्

वादस् अथ चा़स छुन च्यारय्

पीवान प्याल्-त् छिवान् पान

ब्ववान पान-त चवान टख्।।६३।।

रंगिथ वय द्रायिस् संग-कुय्

म्वक्त म्वख्चू ज्ञान अकुय्।

ब्वय बख़चू-रूफ् ग़ारान ना किंह

१ 'थावुन्' क. ख. ग. पाठः। २ 'न्याबुन- क. ख. न. पाठः। ३ 'रिन्दान्' क खादि पाठः। ४ 'च्याल् रस्' क. ख. पाठः।

र्वय न कूँह ब्वय्-तां ना कूँह् ब्वह्।।६४।।

द्यान आसख् आस-त चूय्

ज्ञान ग्वाश-त ग्वाह् आसख् चूय।

विज्ञाना ला-शक मंशख् चूय्

आसख चूय ता ब्वह ना कुँह्।।६५।।

मंडु युसु ज़ाले नारय्

दडु नौव इह संसारूय

दडु सु-ज़ियि न-ता' मरे

रच़डु युसु गाले सारी आर्।।६६।।

सारी बूग्-आहारे निराहार्

न निन्द्रे आसि न हुसि आर

रहिथ् सोरे कर्म न्यथ् बेकार्

रुम-रुम् आयि अवतार।।६७।।

---

१ 'ग्वारान्' क ख ग पाठः। २ 'बुधि - त न कूँह बबु' क. ख. पाठः। ३ 'च़य्' क ख पाठः एवमंवाग्रेऽपि। ४ 'मरु युसु नार ज्वाले' क ख पाठः। ५ 'लागे' घ ड. पाठः। ६ 'सारि' क. ख. पाठः। ७ 'सारि' क. ख.

धानय् म्य चूह-त पानय् ब्वह् चूह
अथि् ज्ञानय् च्य म्य नमस्कार।
पानय पान् पर्ज़ानि-त पानय् व्यचे
न-त अन् ज़ानय् व्यचिय् ज़ानिथ् कूँह।।६८।।
छुह शाह-त गदा सुय-तते
पानय् दात ख़सान् पूरि रव।
कुनि गौव् रय्पय् कुनि गौव बूरे
फल्-कुलिनूय मूरे रव्।।६९।।
कुनि तमाहे कुनि तकाँबूरे
शमा युथ् होरे पूरे रव्।
पव् पव् पलि तय् तस् ना मूरे
वाँतित् वात्यस् पूरे रव्।।७०।।
कृपा-त कारुन् युस् पानय् ज़ाने
मनूय माने दिन्-तय् राथ

---

१ 'आव्' ग. ख. पाठः। २ 'न कूँह्' च. ३ 'छुख्' क. ख. ग. घ. पाठः।
४ 'निरय ाय्' च. 'कुनि गव्' ग. घ. 'गौ' ड. पाठः।

सर्वरूप-द्याना युस् पर्ज़ाने
माने मनि-त नन्यस् ज़ाथ्।।७१।।
युस रूप तारि-तदीफ् संदारे
नाथ सुह् नृप व्यचारे मन्।
किंह मूदि-त किंह् बेमारे
कैंसि ज्ञान-खूरे तारे नाव्।।७२।।
माता रूपी सु म्वदुर् दाम त पीव्।
दडा चडे तथ् रूपी
रव्-रूपी त्रिबाविन्।।७३।।
अन्दर त्रुंख़ि-त न्यबर स्यदि
वुदिख् नाग् त ज़ागुख् तथि।
किंह् बेमारि रस्तिय् मूदी

---

१ 'मनय् मारें' ग. पाठः। २ 'मकनि मानि' क. ख. ड. पाठः। ३ 'नाथ् युस् विचारें' क. ख. पाठः। ४ 'खूड्' पाठः। ५ 'समुद्रा' ड., पाठः।

किंचन विदु-नत रूदिय् तत्य्।।७४।।

ना नमुस् न कदाचित् नमनु

निथ् मनु यम्य सदा सर्वदा।

आकाश-रूप् ज़गि-अन्तर् रमनु

तंथि नमुस् तथा सुह् नमनु।।७५।।

पद् ह्ययि-त पाद् छुह् मंगान्

अंगन् अंगन् श्रप्योम् रूफ्।

अंग्न-कुड् यिथु रूफ् संदारे

अमृत दारे पीवान् दीह्।।७६।।

पान् सुह मानि त ब्ययन् सवारे

निश काठस् तारे चन्दन् बोय्।

---

१ 'वुदुख्' क. ख. पाठः। २ 'ततिय्' ख. पाठः। ३ 'नित ममनो' ग. घ. ड.ए पाठः।
४ 'रूफ्' क. खादि पाठः। ५ 'छुम् आगान्' पाठः। ६ बिय् न स्वारे' ग. घ. पाठः।

काठ् यिथ् बोय ह्ययि चन्दन-दारे
सहज़ूय् गारि त नन्यस् जाथ् ।।७७।।
दाथ् चालि-त क्याह् व्यचारे
पान मरे तय संदारे ब्यय
व्यह् गालि-त अमृत् तारे
तिथुयय् रूप च़च वरि्य क्याह् ।।७८।।
अर्पाविथ् ज़न्म चिदानन्द्
हंसद्वार रव्-रग् ता रूम् ।
कृपा ज्ञान कारून कर्म्
दर्म् सूत्य निरालम्बा रूफ् ।।७९।।
यति कुनि वुछ्यन् तति पानय्
सर्वद्यानूय् रटुमस् रूफ् ।
दीप प्रकाश तीज़ रव् पानय्

---

१ 'ग्वारि - त ग. घ. ड. पाठः । २ 'गालि - त ख्या त विचारे' ग. घ. पाठः । ३ 'रूफ' ख. ग. पाठः । ४ 'तति छुय् पानय' क. खादि पाठः ।

म्य ज़ान्यौव् सुह् ज़ि म्याने छुह्।।८०।।
ज्ञान आकाश् वॉनी निर्वानी
मनि सहाय थान-थानय् छुह्।
आ राम ही राम् बोलो पवन्
ब्वह् ब्वय-तां म्यानिय् छ्युयह्।।८१।।
शये आसख् शये छुयस्
लये पान ब्वयिय् छुयस।
नीरिथ्-त गछ़ान् तेलिथ्-त् यिवान्
मीलिथ् पान् तोत्य दयुय् छुस्।।८२।।
नाद्य् बिन्द् पद्य परम
मदुय् मॉरि-फतुकुय् छुयस्।
विष्णु-ब्रह्मा महेश्वरा
कृष्णा ब्यय् श्याम-सुन्दर छूस्।।८३।।

---

१ 'म्यानि छुड्' घ. छ. पाठः। २ 'आ रामे बालो पवान्' च. 'बोलो पान' ग पाठः।
३ 'दयिय् छुय्' क ग घ. पाठः।

गोम औवतार सुह् महादीव्
सुह् वा सुह् वा सुयय् छ्युस्।
पूरा तोले रामा बोले
ब्रह्म-स्वामी मन्दोरि छुस्।
यिह् किंह् काँछि तिह्-किंह् दिये
दुकान् त्रपित समुद्रुय् छस्।।८४।।
दिशान्-त दीशन हैरान गयिस्
निशान् म्य-अनुमस् शुन्यालय्।
छल लदु चर्कस-त कल् आयि मशान्
यिमन् शन् मानि द्वशान् ब्वंय्।।८५।।
छु-न कुने छुह-ना कुने
वुछह् ओर् न योड् न कुने।
दिय् फश तेले मूल न कुने

---

१ 'राम औवतार' ङ. पाठः। २ 'छयस्' ग पाठः। ३ 'अनुस्' ग. घ. 'अनुम्' ङ. पाठः। ४ 'लदुमय्' क. ख. पाठः। ५ 'सानी वुषार्' क. खादि पाठः। ६ 'वुछुम्' क. ख. ङ. पाठः। ७ 'तोले' क. खादि पाठः।

छिवय् चीतन् त स्वरि-तोन् कुने।।८६।।
ओर-ति ज़ीवा योर-ति ज़ीवा
जीवस् जीवा रस् ख्यावान्।
युसु छ्युह् नाना-रंग रुवुनु
छुह प्रथ् कुने वातर्वनु
च्यांनु म्यांनु ल्वांनु बिंनु बिंनु तय
न-त्र रानु सानुय् अकुय तय।।८७।।
न पृथ्वी न प्यठ्ठी न पातांली
न तली न पांरी नापारी च्वपांरी ज़्यथ्।
अन्तरा शुद्धम् सुशान्तम्
निर्मलम् सर्व तथ् दीवा दीव्।।८८।।
कौन् मरे-ता कौन् प्न्यतारे
समुद्रस सारे तारे थाह्।

---

१ 'ओडति ज़ावा योड-ति' क. ख. पाठः। २ 'रगरवनु' च. 'रंगारवनु' घ ड. पाठः। ३ ल्कानु बिनु न- त' ग. पाठः। ४ 'आुय् ब्वय्' क खादि पाठः। ५ पारि च्चपारी' क. ख. ड. पाठः। ६ 'कूँह न मार-त कूँह्न' ड. च. पाठः।

मदु-रस गंडु ता शशि औतारे
पानस् पान् पुशारे गाह्।।८९।।
ह्यमालय शूज़् यवय् ल्युख पावुम्
तवय् पाँछ् स्मारुम् एका अन्त्।
न दाह् दिये ना केंछ् प्रावे
ठह्रावे न तु स्निहनावे।।९०।।
कांक्षि पूरे अकांक्षित् वाने
पानय् दाता बुख़ता आसे।
वार्सज़ि गाले ब्राँथा त्रावे
नाना-रंग सीर् नाथा बावे।।९१।।
माता पिता त ब्राता पानय्
प्रथ् थानय् न कथ् नये।
निराकार रूप लागिथ् पानय्

---

१ 'पानुय्' क. ,खादि पाठः । २ शुज वालिख् तवा पंछ् स्मारुम् एकान्त्' ग पाठ । ३ स्निह नाविह' क ख च 'स्निह न किंह ग. पाठः । ४ 'लागे' ग. 'गालि-त ब्राँथ' क. ख. पाठः । ५ 'मात पिता-त ब्रात पानै च. पाठः।

सथ् पानय्-त कथ् सन नये।।९२।।
कौन जाने तेरा स्वभाव
प्रभाव परमानन्दा जी।
जो स्मरे हृदय में पावे
जैसी प्रभा भास्करा जी।।९३।।
सारी तत्त्व् आहारिम् गार च़ापुम
ब्रमवावुम् अखंड मण्डल् ता पाताल्।
हा-हू सूतिन् ग्यव् व्यगलावुम्
अंग नावुम् विशेषा गंग्।।९४।।
च्यथय लगिय्-तु पर्दुय पान ज़ान
च्यत्थय लगिय् पर्ज़ान् पान्।
च्यत्थय लगिय ल्यठु छुयय्-तु पर्ज़ान्
ल्यंठु ज़ान् म्यूंठु-त श्वद् ज़ान् पान्।।९५।।

---

१ 'न कथ' क ख ग. पाठः। २ 'उपर्जान्' ग. पाठः। ३ 'द्वादश रव्' क. ख ग पाठः।

वाव् रठ् द्वादशान्त रव् संगटे
मायाय तृष्णाय् मारे मन्।
ब्राँथ त्राव् नाथ् छुय् पनने गरे
साथ् रठ् सूय-त ज्ञानदीह।।९६।।
बाव् ब्यन् ब्यन्-त नाव् छहस् क्रेठान्
ऐठन् अंगन् अकुय् पय्।
लय् पवनस् म्वय छ्युय् बानस
मानुन्-त पानस् निश छुय्य् दय्।।९७।।
मूर्थाह् करिथ्-त अमूरथ् पचीय्
खाख् छ्य-तांय् क्याह् पचे़।
पँछ महाबूत् करिन् फचे़
ह्यंच् माया तय् करि-ना बुत्।।९८।।
मनि गालि त पानय् व्यचे़

---

१ 'नाव छुम्' क. ख. पाठः २ 'करिनम्' क. ख. पाठः। ३ 'नाबूद् ख पाठः। ४ 'लागित' ख. ग. ड. 'लालित' क. पाठः। ५ 'ग्वारि-त घ. ड. पाठः।

अहं गारि त क्याह् सन यछे
ब्ययन् ठडि डालि-त पानय् ऩचे
वाह्.वाह गुलि् फ्वलि्-ना तुल्-ना मूल्।।९९।।
गंडिथ-त डेंटोन् द्रायाय ब्वह् तस्
क्याह् लबांव् तस आासन जाय्।
न ब्वयि पाफ् तस् न पुज़ ख्वय् तस्
आासान् ब्वय् तस् न आसान्-जाय्।।१००।।
संबूर-एरू वातान् ब्वह् तस्
तंबूर-साज़य गूँ यस् ब्वय्।
शशि दारि लव दिमहा ब्वह् तस्
गंबूर-तोतस् क्याह् बोल्याह्।।१०१।।
अनेक नंजू मेज्याम् दर्याव्
अवय् स्वबाव आव् स्वरूप्।

---

१ 'दण्डु' पाठः। २ 'ब्यूर' ड. पाठः। ३ 'दि महाबूतस्' क. ख. 'दिमा' च. पाठः। ४ 'न' क खादि पाठः।

ना किंह थव-त ना किंह त्राव
बहु दीप आव नह छिपा रूफ्।।१०२।।
आकाश सुह मदुर वछूम दार
तवय-तार रटुमस् पव।
दीपा शशि-रव् रूप औतारे
बहु-आकार न-तु निराकार।।१०३।।
युस्-सा कन्दि बस्मा करे
पसमंद् तिहन्दु शून्या-रूफ्।
शास्तर् शस्तर क्याह मूचरे
लुहार-अग्न् सुह मार्यस दीह्।/
किंह-न सुह मंगे क्याह न स्मरे
धान् सुह वरे बिय-त पान्।।१०४।।
अनाहन् शब्द मना गंडिथ्
पान मंडिथ् रिशीयस।

---

१ 'युस् मा' क ख. ग. घ. पाठः। २ 'अग्न् समारिस्' ग. पाठः। ३ 'किंह न सरे' ग. पाठः। ४ 'अनुपन् मन्' क. खादि पाठः।

हाकै बान बरिथ-त पान्
साकै वाकय् आसि दानिस्त्।।१०५।।
दूर च़ल तह् हुरुय् कॉछ्यह्
पूरे ख़सि ध्यम आयित
सुय शन आयीन क्वरूनय
न शीतल् शीतल् माह् ब्वख्।।१०६।।
दर्याव् - अन्दर अंशाह् आव्
ज़ाव् म्यच्य़-त ज़ायिस् म्यचू।
म्यच्यय् बूग-त न्यामचू ख्याव्
म्यचि़य् करुय् पारिज़ान्
अवय् म्यचि़ वज्योव् म्यह चूह्
पतोह् श्रपिथ् म्यचि़य् गव्।।१०७।।
आयाव् वर् ह्यथ् यति स्वर् रहुस्-ता
समुरुन् म्यचे़ पाज़ु त वाव।

---

१ 'रहुस् न स्मरिन्' ग. पाठः। २ 'वथदज त' ख. पाठ :।

अग्न् आव्-त वाह वाह रंग् प्यव्
ऩचान् त्रचान् सपुनुय् नाव्।
आज्ञा आयि-त च़लु हा चूर्-ज़न्
वाव् आसु व्वदन्यत् क्यथ सन प्यव्।।१०८।।
रहे निशाना ईश्वर-रुन्दु नावा
कति आयाव्-त कतु-सन गव्।
समरिथ्-त सादिथ् तमि कज़ाव्
दीव ह्यत मुख़ी त सीव् करहास्।।१०९।।
छुननस् लूब क़द काम् मूह मद् अहंकार
च़ाव् संसारस् त अमल् कर्यस्।
पतोह आमाल् अमल् होरने गाव्
प्वंछ़ आयाव-त क्कछ़ क्या निये।।११०।।
ईश्वरि वाद् ह्यथ् च्वत् कजाव्

---

१ 'वथदज्-त' ख. पाठः। २ 'काम क़ेद लोब' क खादि पाठः। ३ 'त' क खादिषु नास्ति। ४ 'ईश्वरी' च. पाठः।

यति आव्ं त आंसु मनुष्या रूफ्।
युसुह् देव स्वरि मनस त बाब प्रथ जुवस्
तिम् जूह् सीव् कस् कालि अथे आय्।।१११।।
तिमय् छिय् मनुष्य न-त किंह् द्राय गुपन
यिमन् आदन् सुह् पान् मशिथ् गव्।
प्ययख् बुडिथ् च़ीतन् सु दन सोर्यख्
छयञि बान कति मालि दरकार् यिये।।११२।।
सहज त आनन्द् रह हा दारिथ्
पानय् पान् संदारिथ् क्यथ् ।
कृपाय् च्याज़े गछ़ हा तरथि्
ईश्वर रूफ् स्वरिथ् तह क्यथ् ।।११३।।
सहज़ त ज्ञान ज्यिम् परमानन्द्
अव रूप सानन्द् आसिय् कोई।

---

१ 'सरि' ख. ग. पाठ : । २ 'छयन्' क. ख. पाठः । ३ 'यिय्' च. पाठः । ४ 'किथ्' ग. घ. पाठः । ५ 'सहज' न' ग. पाठः । ६ 'सारिथ्' क. ख. पाठः । ७ 'आसेख् तये' ग. पाठः ।

आत्मा रज्यय् वाचू मा स नद्
मदु सा सुह नद् वहं वज़ी ।।११४।।

ओं श्रीगुरवे नमः ।

बू यो न बीजम् तोया न तीज़म्
वायु नाकाशम् अवा ताह सर्वम् ।
न ज़ि ब्रह्माणडम् नच़ खात्म-आत्मम्
शक्ति स्वरूपम परं ब्रह्म सोहम् ।।१।।
पुरुषो त पुरुषात् विमर्शो त मर्शात्
वर्ना-तीज़ो शान्त अन्तर् आकाशम् ।
सूक्ष्मो त विस्तार् न परं व्यापारम्
न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम् ।।२।।
थावर् त ज़ंगम् नह् च़तुर्वर्णम्
ज़ग् त च़राच़र् तथ् परमामारम् ।
सथ् ना असतु अछिन्नदारम्

---

१ 'मदुरसा' क. खादि पाठः । २ 'अवता' क. ख. पाठः । ३ 'पुरुषाथात्' क खादि पाठः । ४ 'सन्नसतोच्छिन्न' ग. घ. पाठः ।

सूक्ष्मो समादि परं ब्रह्म सोहम्।।३।।
जागो जुगान्तर् सन्यास-वर्णम्
तुरीया-अतीता तथ प्रसिन्दोहम्।
अचिन्त्यरूपं परमाकारम्
थ्यर केवलोऽहम् परं ब्रह्म सोहम्।।४।।
माता न पिता ब्राता न बन्दु
वार्ता स वेदम् एको केवलोहम्।
ग्वरू न चेला मन्त्रो न लीला
तथ युस् अकेला परं ब्रह्म सोहम्।।५।।
मोहो न ब्वदि नच वैराग्यम्
नच़ राग-दोषम् निर्वैरशान्तिः।
स्वप्न् न जाग्रथ् तथ् शुद्दबोदम्
सूक्ष्मो स्वयम्बू परं ब्रह्म सोहम्।।६।।
पादू न बीजम् चतुर्बुजाकारम्

---

१ 'जोगन्तर्' ग घ च पाठः। २ 'प्रसिद्धोछम्' क, खादि पाठः। ३ 'द्वषम्' ङ. पाठः। ४ 'बीजन्' ग. घ. च़ पाठः।

न त्रि-ज़ग् चराचर् अनन्तरूपम्।
सहस्रनामम् निरादारम्
शुद्ध-स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम्।।७।।
स्यदू न स्यजू विद्या न गति
रिद् न परीक्षा आकाश-रूपम्।
खगाकाश् उल्लंगिथ् नच राजयोगम
न लम्ब न निरालंब परं ब्रह्म सोहम्।।८।।
रूपं न रस् न स्पर्श् गन्द् न देहो
दुयी दयस् न छुस् केवलोहम्।
ज़ीवो जीवता न वर्ता न वार्ता
कर्ता सहोकार् परं ब्रह्म सोहम्।।९।।
इडा न पिंगला नच ब्रह्मनाडी
स्वयिय् सुषुम्ना पायाहमेव।

---

१ 'खाकाश' क खादि पाठः। २ 'दपिस्' ख. ग. 'छुयस्' ख पाठः। ३ -सहि' घ. 'स हि सुषुप्ता' 'सा हि' ग पाठः।

अनाहत् अनामय तुरायाऽवस्था
आनन्दरूपंद परं ब्रह्म सोहम्।।१०।।

इति स्वानुभवोल्लासदशकम्।

तथ् अन्तर दृष्टि संबावुम्
यिह् म्य त्रावुम् तिह् आवुम् नये।
लल्ल् माधव शिव् ईकावुम्
ब्येकावुम् दीह् म्य पानये।
च्यत्थ अन्तर मन्ज़लि सावुम्
ललावुम-त म्य बावुम् नये।
पूर-विचार् प्रागित् आवुम् !
यिह म्य त्रावुम तिह आवुम नये ।।२।।
यमि तराज़ि दीह् संबावुम्
मावु आवुम् सुय् पानये।

---

१ 'दृष्ट' क. खादि पाठः। २ 'प्रगितु' च. पाठः। ३ 'सिर रादुम्' घ. ङ. 'मि रावुम्' ख. पाठः।

मन सथ-असथ् सिरावुम्
लानु त्रावुम्-त कुस् म्वल् दिये ।
व्वञ् म्यानु सारुय तवय् छुस् सावुय्
यिह् म्य त्रावुम् तिह् आवुम्-नये ।।३।।
दीह-अन्तर सुषुप्त् सावुम्
जागावुम् तुरीया आये ।
अनाहत् आनन्द खिलावुम्
मिलावुम् अनामय् च्चये ।
तद्-रूप म्य-पान ललावुम्
ब्वह् छयस् सावु-त किंह् रावुम्-नये ।।४।।
कलि-कलि मिलवावुम्
ललावुव् रूफ् पानये ।
तव अन्तर् दीह नावुम्
पीवावुम् रस् पानये ।

---

१ 'कुसु' क. पाठः । २ 'मिलनावुम् लल्लि हावुम्' क. ख. ग. पाठः ।

तव तुष्टि निदाना प्रॉवुम्
ब्वह छयस् सॉवु-त किंह् राहुम्-नये।।५।।
ब्वद् ख्ययम् च्यॅयम् प्रख्टेयम्।
च्योम् वैराग्य अक्षय् दाम्।
द्वन् गूचॅर व्यचार् सॉवुम्
निनावु रिशियस् तवय्।
आदि श्रुथ आचारॉवुम्
ब्वह् छुयस सावु किंह् रावुम्-नये।।६।।
न खूचस् न कूँह् लज्जुम्
व्वपजु तिय् पानय् ऑनुम्।
न म्य करु-त न सॉपनु
रंजु सहज़ हीत् अवय्।
रीच़-तीच़-त प्रीच़ निबॉवुम्
ब्वह् छ्यस् सॉवु-त किंह् राहुम् नये।।७।।

---

१ 'किंह् न' ग. पाठः। २ 'निनावु रीशस्' घ पाठः। ३ 'आचार आवुम्' क. खादि पाठः। ४ 'नहि' च. पाठः। ५ 'लज्जुस्' च. पाठः। ६ 'आब्' क. खादि पाठः।

तत्त्व प्रसंदिथ् दय् प्रावुम्
अंग गॉलिथ् ज़ग् मा म्बये
ना ख़ोच नाल्वन् करि-ज़े
प्रज़ि न्यर्मल् श्वद्द शिवय्।।
दिन् प्रलय् तक् एकावुम्
ब्वह् छ्यस् सावु किंह् रावुम् नये।।८।।
ऐकतु परमबूद् सदानन्द
तसि विदीह समाद् यस स्वर् आसे।
रिदू स्यजू विद्या यस आदरु असि।
तत्पदवी रसे बिय् क्याह् आसे।।९।।
रिद्द-स्यद्द-विद्या ग्रज़ि आगरय्
तसि गरय् व्यबव् सागरय् ग्वाह्।
करि सूर्य उदय् च़लि गटकारूय्

---

१ 'तत् प्रसन्नो उदय्' ग 'उदय' क. ख. 'प्रसन्दि उदय' च.पाठः। २ ' लागिथ्' घ. पाठः। ३ 'ज़यमा मयीं' च. पाठः। ४ 'न खेचिव लोकाव् ग. पाठः। ५ 'तथ्' क. खादि पाठः। ६ 'तय' च. पाठः।

सहज़ विचार तथ् सारबूद्।।१०।।
व्रत् सथ् तत्त्वबूद् श्वद्दि आचारा
इय व्यवहारा वीद-तां यूग्।
च़ह् कुंस् ब्वह् कुस् कूँह् व्वच़ारा
अंछिन्न-दारा सुय् चे़न् रूफ्।।११।।
यिह् रूफ् सुह् रूफ् पर-रूफ् वले
आव कले निरंज़ना रूफ्।
यिह शूब लूबस ज़ान्-वेगवले
अज़रामर् आसे श्वद्द-दीह।।१२।।
ओं तत्सत्।। आदित्: श्लोका: १४६।।

इति श्रीशारिकादेव्यवतारूपाया: श्रीमाधवदरस्यात्मजायास्तपस्विन्या
रूप्यभवान्या रहस्योपदेश: समाप्त:।

---

१ 'शुद्दि' च. पाठः । २ 'लूब म जान्' क. खादि पाठः ।

[illegible]

वासकूरा का अस्थापन

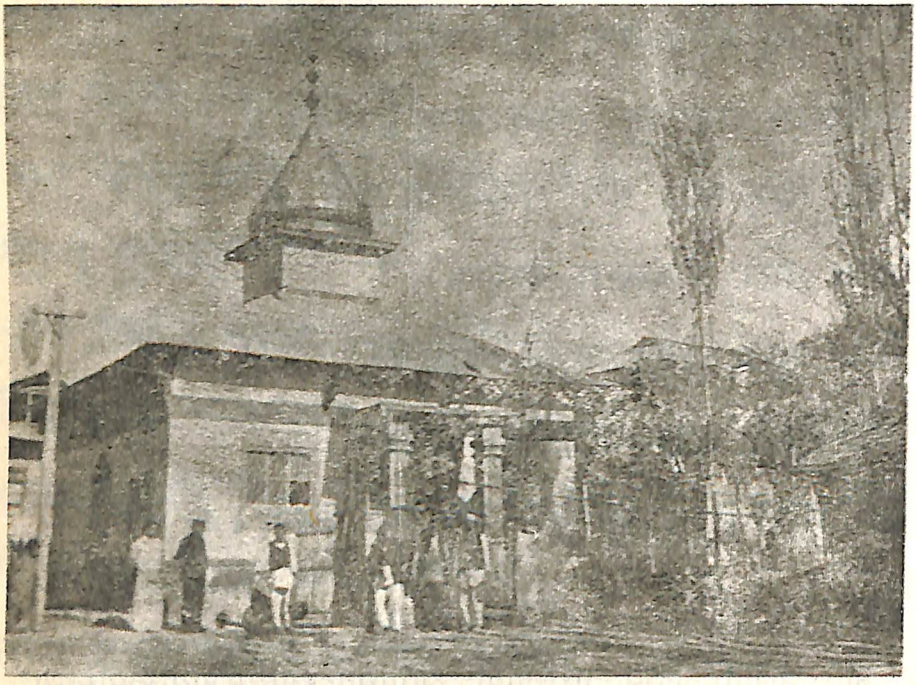

जहाँ देवी रूपभवानी का पितृपक्ष का श्राद्ध मनाया जाता है।

वासकूरा का चमत्कार

देवी रूपभवानी ने अपने अनपढ़ भतीजे बालजू दर से कहा 'लिखो', और वह एक बहुपठित व्यक्ति के समान अनायास लिखने लगा।

चश्मा-साहिबी का अस्थापन (वस्तरवन)

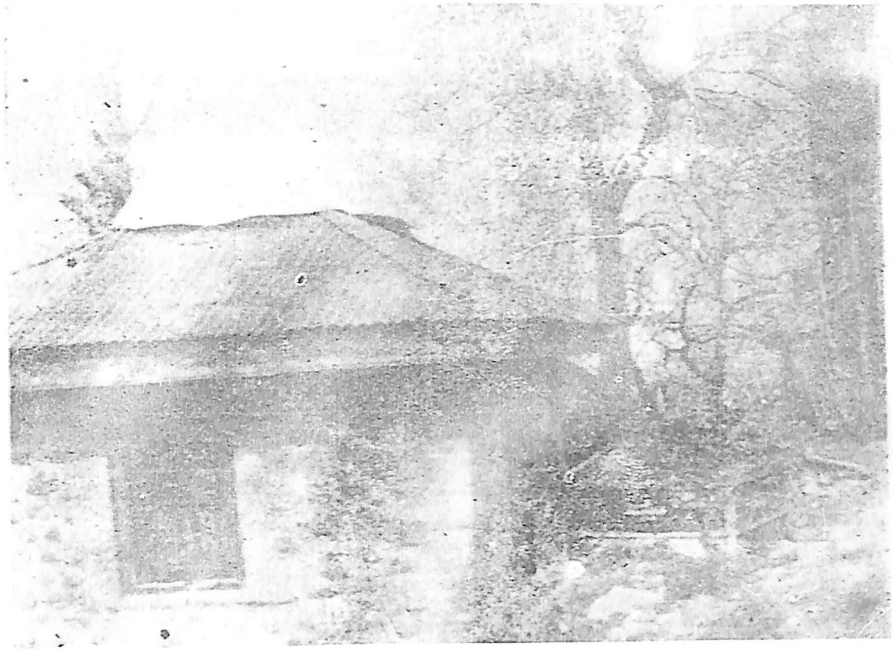

यह अलक्ष्येश्वरी श्री रूपभवानी का प्रथम तपस्यास्थल है। यह स्थान परी-महल की पहाड़ियों पर (राजभवन के निकट) चश्माशाही के पास है।

आरती

श्री रूपा भवानी, अलखेश्वरी साहिबा

ओं जय जय रूपा भवानी ।।
शक्ति स्वरूपा, मुक्ति प्रदाता,
अम्बा जगत की तुम हो माता ।
भक्तिभाव से तुझ को ध्यावे,
धन्य है मॉ वह प्राणी।। ओं जय०।।
ज्ञान की तुम हो अक्षेय भंडार,
तेरी शरण जो नैया उसे पार।
निज आनन्द में इत उत चमके,
जिस ने गत पहचानी ।। ओं जय०।।
अलख तुम्हारे नाम अलक्ष है,
साहिब तेरे काम अलख्य है।
तेरे मुख से अमृत वर्षा
तेरी अनमोल वाणी।।ओं जय०।।
डूबे इस अन्धकार में माता,
कलयुग के व्यवहार में माता ।
तेरा ही प्रकाश प्रदर्शन,
पथ का करले रानी ।। ओं जय०।।
धर्म अर्थ, काम, मोक्ष धारा,
कल मल हरनी रूप है न्यारा ।
जल में है वह कमल समान,
जिसने बात यह जानी।। ओं जय०।।
कष्ट निवारो माता सारे,
नील गगन में चमकें तारे।
सतम निशा में ज्येष्ठ पुनि को,
चमकी चन्दा रानी ।। ओं जय०।।
'प्रेमी' भगत है तेरे द्वारे,
शरन तिहारी कर जोड़ सारे।
मनो कामना पूरी करलो दुनिया आनी जानी।
ओं जय जय रूपा भवानी।।

श्रीनगर २०-१-१९७९

सर्वानन्द कोल, 'प्रेमी' सौफ, कुकरनाग (काश्मीर)